आज का पुरुषार्थ, 8 May 2022

From: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" आज लक्ष्य बनाये .. मुझें **मैं पन को त्याग** करना है .. स्वमान में रह अभिमान को सदा के लिए विदाई देना है "*

जो आत्मायें श्रीमत पर चल रही है और जिनका बहुत ऊँचा लक्ष्य है कि ....

" मुझे विजयी रतन बनना है .. भगवान के पास आये है तो कुछ प्राप्त करके ही जायेंगे "

... ऐसे नहीं की मिलन की खुशी हो गई और बस काम हो गया। हम तो भगवान से मिल लिए। अब चलो ... फिर इधर-उधर भटकने लगे।

इससे काम नहीं चलेगा।

तो ऐसी आत्माओं को अपनी **साधना** पर बहुत ज्यादा ध्यान देना चाहिए। हमारी सभी साधना में एक साधना **सम्पूर्ण निरहंकारी** बनने की है। और इसका सूक्ष्म रूप है "**मैं पन**" का त्याग।

जो आत्मायें सम्पूर्ण रूप से निरहंकारी बन जायेगी वही विजयी रतन होंगे। हम सभी लक्ष्य बना ले अपने सूक्ष्म अहंकार का भी त्याग करना है।

प्रायः देखा जाता है कि बहुत मनुष्य को अपने **सूक्ष्म अहंकार** का पता ही नहीं होता। उसमें ही चलते आये, पूरा जीवन गुजारें। और सोचते है, हम तो बिल्कुल ठीक है।

वे कपड़े साधारण पहनते, खाना भी सादा खाते। लेकिन दुसरों को पता चलता है कि इनमें कहाँ कहाँ मैं पन है? अहंकार के साथ मैं पन को भी पहचानेंगे।

और साथ में जितना गहरा हमारा **स्वमान** बनता जायेगा उतना ही गहराई से हम मैं पन को, सूक्ष्म अहंकार को जानते जायेगे। फिर उसे छोड़ना भी सहज हो जायेगा।

जो अच्छे **ज्ञानी और योगी है** उनको देर नहीं लगती। एकबार realisation हो जाये, पता चल जाये कि मेरे अंदर यह कमी चलती आ रही है लम्बे काल से।

उसमें बहुत सारी बातें है .. " **मैं इन्चर्ज हूँ, बड़ा हूँ .. मेरी बात मानी जाये** "

इन्चर्ज का भी नशा, वह किसी भी डिपार्टमेंट का हो। बाहरी दुनिया में कहीं आप अधिकारी है, उन चीजों का extra नशा जब हो जाता है .. इससे आत्मा को बहुत नुकसान पहुँचता है।

इससे आत्मा के **दिव्यता** पर बहुत बड़ा असर पड़ता है। और हमें तो अभी सबकुछ स्प्रीचुयाली प्राप्त करना है।

बाबा से सबकुछ लेना है, तो उसकी **आज्ञा का पालन** हमारे लिए परम आवश्यक हो जाता है। क्योंकि जो आज्ञा पर चलता है, बाबा उसकी बात सुनते है। मदद भी उनको सबसे ज्यादा मिलती है।

हला कि बाबा सबकी बात सुनते जरूर है, परन्तु कोई आत्मा अपने अहंकार के कारण बाबा की बातें सुन नहीं पाती। अहंकार के दीवार सामने आ जाती है।

तो हम अपने मैं पन को पहचाने ...

" मैं बुद्धिमान हूँ .. समाज में मेरा कितना मान है .. मैं बहुत फेमास हूँ .. मैं धन की शक्ति से कुछ भी कर सकता हूँ .. मैं सुन्दर हूँ "

यह सब देहभान की बातें जो मैं पन से जुड़ी होती है।

तो तीनों चीजों को चेक करें ...

मैं पन भी, भिन्न-भिन्न तरह का देहभान भी और अभिमान भी। अहंकार उसका सूक्ष्म रूप होता जाता है।

पर अभिमान से भी हमें मुक्त होना है। तो स्वमान की बहुत अच्छी practise करेंगे।

जो जितना **स्वमान** में रहते है, अभिमान उतना ही उनका समाप्त हो जाता है। जो जितना स्वमान में रहते है सम्मान उनके पीछे परछाई की तरह चलता है।

बाबा ने हमारे बहुत सारे **स्वमान** जगाये है। इसको बहुत अच्छी तरह **अभ्यास** में लाये। स्वमान पर डिग्री हासिल करें। इसमें नशा चढ़ जाये।

बाबा ने मैं पन के लिये यह रियेलाइजेशन भी कराया ...

" जो कुछ तुम्हारे पास है वह प्रभु देन है .. इसलिए इस प्रभु देन पर अभिमान नहीं होना चाहिए "

हम सदा याद रखे ...

" **बाबा दे रहा है .. वो साथ है** .. मेरा नाम भी हो रहा है तो वो ही करा रहा है .. हम अच्छा कुछ बोल रहे है तो वो ही बुलवा रहा है "

इससे मैं पन लोप होता जायेगा। भले ही समय लगता हो। तो मैं पन का लोप करना लक्ष्य बना ले। निरहंकारी बने। तो विजय माला में हमारे नम्बर अवश्य ही फिक्स हो जायेगा।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org